मैथिली शरण गुप्त का काव्यादशश और राज्यादशश

डॉ स,rाष चडबास 'चौधरी'
џसोिसџ7 प्रोफ`सर, ि5'दी िििrाग,
रामलाल आनद कॉल`ज, नह िदल्ली।

म'िििलीशरण ग,™ राष्ट्र ीय सास्कृ िUक च`Uना क` किि 5ैं। समाज ,संस्कृ िU ,ि`ष्णि धमम दशमन क` साि 5ी राष्ट्र प्र`म, समन्वय rाििना और मानीय मूल्य आपक` काDादशम र5` 5ैं। सास्कृ िUक मि5मा मण्डन करU` 5џ पौराििणक, ि`ििदक काल स` ल`कर आध,िनक समय में पाररिार ,समाज,धमम, अिम,राजनीिU की िििषयि™,, माU,rूिम प्र`म , राजा प्रजा का सब्बंध, ग,रु का म5त्व , wाग ,बिलदान ,कUमD परायणUा , मयामदा आिद सrी आदशम मूल्यो` का िचत्रण -िणमन अपन` काD ग्रि џ्क िUयो` में ग,™जी न` ब?` Uन्मय rाि, स5जUा और कलात्मकUा क` साि िकया 5`। साक` U, rारU rारUी, जय5ि िध ,जय rारU, म`गलघ7
,िस5 राज आिद िििrन्न रचनाओ` में ग,™जी न` यक्ति िचU िrन्न Vप में राष्ट्र नीिU स` ज,?` िििrन्न पक्षो`, िििषय, आदशम को
प्रिUिब`िबU िकया 5`। हिU5ास का गौरि गायन , िUमान की िच`Uा, रामराज्य की कामना , माU,rूिम प्र`म, िििद`शी शासन स` म,िि की आकाक्षा ,अमानीयUा џ् अwाचारो` क` प्रिU अस`Uोष, आक्रोश, गा`धीििादी शाििU और अि5`सा का पोषण, राष्ट्र ीय џकUा और जनच`Uना का आह्वान, माU,rाषा प्र`म, नारी क` प्रिU सम्मानपूणम 7िष्ट्र , गरीब अमीर में समानUा का rाि, प्रजाU`त्र में जीिन की स,खद अन,rूिU ,सजगUा, समन्वय rाििना आिद िrन्न िििषय ग,™जी क` काDादशम џ् राज्यादशम को 5ी प्रिUफिलU करU` 5ैं।

मन,ष्य क` िक्रया Dापार 'मनसा िाचा कममणा' क` द्वारा र`खा`िकU 5ोU` 5ैं। सwििािदUा, सw rाषण मन,ष्य की िििश्वसनीयUा का प्रिम सोपान 5`। म5ाराज दशरि स` सब्ब्द्ध "उिि 'प्राण जाџ पर िचन न जाџ" लोक प्रिस5 5`। साक` U में rी राजा दशरि सw ,अि5िँसा को सिमिप्रय मानU` 5ैं। सw 5ी सब धमॉ का सार Uत्व џ् स`सार की ि3िरUा का कें5 5`। हसिलџ राजा सw की रक्षा क` िलџ मृw को गल` लगा ल`Uा 5`। क7,सw rी औषिध की rा`िU जनकल्याण का कारक बनUा 5`। उिममला "सच को
िकस ओर आन्च 5`" क5कर िनििमh जीिन का सन्द्श द`Uी 5`। जीिन में उत्सा5 ,ध`यम ,सा5स का िििश`ष म5त्व 5ोUा 5`। 'िस5 राज' में कणम द,योधन
को िनराश न5ी 5ोन` और उत्सा5पूिमक जीिन की प्र`रणा द`Uा 5`। साक` U में ग,रु िििशष्ठ Uन में अ`िUम श्वास क` र5न` Uक मन,ष्य को अन`क बाधाџ् झ`लU` 5џ rी उत्सा5 बनाџ रखना चाि5џ " स,गिU 5ोUी 5` Urी य5 प्रा™/ प्रलय में rी लय र5` िनज Dा™।"1 िििपK क` समय धमम और सा5स 5ी सबस` ब?` शस्त्र 5ोU` 5ैं। साक` U में उिममला धमम क` कारण िििध, िििधाUा क` rी अन,कूल 5ो जान` पर बल द`Uी 5`। व्रUधाररयो` की 7ढ़Uा क` प्रrाि स` आनद में बाधक rी साधक बन जाU` 5ैं। गा`धीििादी स5नशीलUा और धमम क` कारण अwाचारी 4ग्र 5ार मान ल`U` 5ैं। मन,ष्यUा और मानिUाििाद को म5त्व द`U` 5џ किि 4ािम को िUला`िजल, लोक स`िा को परम धमम और कमम की म5Kा पर जो द`Uा 5`। हस wाग rाि स` मन,ष्य की म,िि का द्वार ख,ल जाUा 5`। 'म`गलघ7', द्वापर आिद रचनाओ` में किि मन,ष्य क` मन,ष्यत्व rाि और ह`सािनयU पर जोर द`Uा 5`। उग्रस`न मानीय आदशॉ क` पालन का सन्द्श द`Uा 5`। "मैं क5Uा ह` ,यिद मन,ष्य 5ी/ बन` मन,ष्य 5मारा/ Uो क7 जाџ द`ि द्wा का/ कल5 कल,ष य5 सारा।"2 सील, सदाचार, दया, स5ान,rूिU ,करुणा, परोपकार, स`Uोष џ् बिलदानी rाििना की म5ानUा और मानीयUा क` उच्चादशम किि की िििrन्न रचनाओ` में िचित्रU 5ैं। 'साक` U' में प्र`म rाि क` िििशष्ट्य और अम,त्व प्रrाि को 4ष्ट्र करU` 5џ किि न` जीिन में प्र`म की सािमकUा और अिप्रUमUा को अिrD`िजU िकया 5`।हसीिलџ जीिन में सदा "प्र`म की िििजय 5ोUी 5`।"3 बन्धु बा`िध ,िपU पत्नी ,माUा िपUा ,rाह rाह और सrी पररजनो` में पर4र समरसUापूणम सब्बंध का िनिाम5 पररिार की ख,श5ाली , 4गाय आनद क` साि-साि समाज और द`श की शा`िU Dि3ाा को rी र`खा`िकU करUा 5`। "यिा राजा Uिा प्रजा " ज`सी प्रचिलU उिि पूर्ण स,खद जीिन की यािािम अन,rूिU करान` लगUी 5`। "न5ी` कोी ग़ कल5 प्रजा में 5ैं स`U,ष्ट्र Uिा सब शाU/उनक` आग` सदा उपि3िU िदD राम क,ल का 7ष्ट्र ा`Uा"4

नारी क` wाग, W`5 , समपमण rाि की म5ानUा को ग,™जी न` साक` U, यशोधरा, िष्ण,िप्रया शक़ Uला, स`रfiीआिद अन`क क़ िUयो` में पूर` सम्मानपूिमक िदया 5`। िपU क` प्रिU Ųकिनष्ठ W`5 rाि , कUMDिनष्ठा और स`िrाि आिद rारUीय नारी क` उच्च आदशfi को र`खा`िकU करUा 5` । साक` U धाम में उिममला का Uिप4नी क` Vप में जीिन DUीU करना और सीUा का राज म5लो` को wाग कर राम क` साि िन- िन r7कना Ųस` 5ी ऊ च` आदशfi क` उदा5रण 5ैं।नारी नर की सयोिगनी,कममिप की साधक ,स5कमा और स5िधममणी

बनकर आUी 5`। "4ामी सि5U सीUा न`/ नक़्ल माना सघन- ग5न कानन rी/ िन ,उिममला िधू न` /िकया ऊ5ी क` िं5Uािम िनज उिपन rी"5 'माUा न क़ माUा ' क5कर ग,™जी माU,त्व की श,िचUा की रक़्ा करU` 5ैं और rाहयो` क` परर4र W`5 ,सौ5ादम और रक़्ा rाि को राम आिद सrी rाहयो` क` आदशम क` साि 5ी 'जयrारU' में गन्धिfi क` द्वारा कौरिो` को बंधक बनाŲ जान` पर य,िधिष्ठर का शत्र,rाि r,लाकर पिंडो को कौरिो` की रक़्ा क` िलŲ स`बोधन भ्राU,त्व rािना का उKम उदा5रण 5` । राम क` द्वारा स5ज 4ीक़ िU Ųस` 5ी wाग rाि की अन,पम क़ िU 5`। "rरU में और म,झमें r`द क्या 5`/ करें ि` िप्रय ŲकU िनज कमम पालन

/ाu/ गा मैं िििपन में धमम पालना"6 धािममक Ųिं जाUीय सकंीणUाओ स` ऊपर उठकर किि न` क़ णाल गीU, ग,रुक़ ल, ि5`दू, अनघ, जयrारU आिद रचनाओ` में समानUा, मानिीयUा की rािधारा प्रिाि5U की 5` । सrी में Ųक 5ी आत्मा और Ųक 5ी प्राण का िास 5`, हसिलŲ सrी का प्र`म पूिमक र5ना 5ी श्र`ष्ठUा का पररचायक 5`। "परमात्मा क` प,त्र सrी 5म / कोह न5ी घृण कयोग्य / भ्राU,rाि पूिमक र5कर सब / पाओ सौ% शाि्ि आरोग्य।"7

ग,™जी अपनी रचनाओ` में रामराज्य की कल्पना को साकार करना चा5U` 5ैं, िजसमें राजा प्रजा का स`िक

बनकर शासन करUा 5`। राजा सदा 5ी राजधमम का पालन करU` 5Ų प्रजापालक का उKम उदा5रण प्र™,U करUा 5` । ग,रु िििशष्ठ rी शत्र,h को प्रजा क` प्रिU W`ि5ल 7िष्ट rाि रखन` का सन्द`श द`U` 5ैं । "िािर द`खो उस प्रजा की ओर/ चा5Uी 5` जो क़ पा की कोरा"8 राजा सदा 5ी लोकमU को सम्मान द`Uा 5`, हसिलŲ राजा और प्रजा दोनो` 5ी स,ख-द,ख क` परर4र rागीदार 5ोU` 5ैं। 4यं राम rी हस` स™,U करक` Ųक आदशम जननायक की अिधारणा को पूर` िििश्व प7ल पर 3िािपU करU` 5ैं । प्रजाU`त्र में जनUा का शासन 5ोUा 5`। हसिलŲ ग,™जी राम को Ųस` जननायक क` Vप में द`खU` 5ैं, िजस पर जनUा rी पूरी Uर5 आश्व™ 5ो। "च,न` सब िमलकर िनज न`Uा/ चाि5Ų 5में चररत्र न`Uा"।9 हसीिलŲ राम कUMD िनष्ठा का पालन करU` 5Ų राज्य में "दाियत्व rार और प्रजा का Dि3िाकार " का िनिाम5 करU` 5ैं । 4ािम और मो5पाश में जक?ा राज्य का शासन wाज्य 5` । राज्य में स,ख सम,ि5, धन-स`िपK ,4ाV लार, धमम और मानिUा की िृि5 5ी राजा का Ųकमात्र लक्ष्य 5ोना चाि5Ų। 'िस5राज' में राजा जयिस`5 Ųसी 5ी कामना करU` 5` और राजा और प्रजा क` परर4र स5योग स` राज्य की प्रगिU और श,rकामना 'जय rारU' में rी अिrD`िजU 5` । राजा का क्रूरUा पूणम Dि5ार सद`ि िन`दनीय बUाया गया 5` ।राजा

राणि और सeाi7 अशोक का उदा5रण लोक प्रिस5 5`। राजा क` द्वारा प्रजा क` ि5Uो` की अनद`खी करना और िनर`Ur उस` कष्ट साध्य जीिन जीन` क` िलŲ िििश करना Ųक िदन ज्वालाम,खी क` समान िि्स्फो7क और िि5ो5 का कारण बनUा 5`। हसीिलŲ राजा को सद`ि न्याय िप्रय और मानिीय 5ोना चाि5Ų । 'म`गलघ7' में राजा िीर स5ं प्रजा क` प्रिU न्यायिप्रयUा क` कारण अपन` प,त्र को rी िनस`कोच rाि स` द`िडU करन` स` न5ीं चूकUा। िििद,र क` द्वारा ध,Uराष्ट्र को न्यायिप्रयUा का िदया गया सन्द`श स्िि कल्याणकारी जान प?Uा 5` । "rल` 5ी द,ष्टो` की स5मिU न` 5ो िश™ िििध स`/ बनो सच्च` राजा क़ U स्क़ U स`,न्याय िििध स`।"10

सKा क` मद में चूर अ5`कारी राजा का िनाश अि4`rािी और शीh 5ी 5ो जाUा 5`। प्रजाU`त्र में जनUा का मUािधकार का प्रयोग क़ शासक को बदलकर स,शासन की Dि3िा क` िलŲ अwिधक श्र`यष्कर उपाय 5` ।ग,™जी न` द्वापर में राजा उग्रस`न की मदा`धUा और राजा क` द्वारा प्रजा पर अwाचारो` को िन`दनीय बUाया 5`। ग,™जी न` प`चशील क` िस5ांUो का म5त्व बUा कर प्रजाU`त्र और मUदान की 4U`त्रUा और उपयोिगUा को rी सािमकUा प्रदान की 5` ।प्रजाU`त्र लोक कल्याण का प्रUीक माना जाUा 5` , स्िि5Uकारी 5ोUा 5`। 'साक` U' में

सीUा मUाधिकार प्रजाU'त्र को म5त्व द`Uी 5`। "मU की 4U'त्रUा िशिष`Uा आयfi की/ िनज मU क` 5ी अन्सार क्रिया कायfi की।" 11 Uो 'िक स'5ार' में 5र प्रकार स` समिम ,योग्य राजा क` च्न` जान` पर ग्™जी न` बल िदया 5`, क्यो'िक प्रजा अपन` राजा क` च्नाि क` िलU 4U'त्र 5`। "5म दूसरा राजा च्न` जो सब UR5 अपनी स्न` /कारण , प्रजा का 5ी असल में राज्य 5`।"12 किि न` प'चशील
िस5ा'U ,प्रजाU'त्र, मUाधिकार ,नारी का िशिश`षाधिकार, समानUा ,स5योग , सKा में परिरािद का िरोध, समाजिद की 3ािपना , सw और अि5'साािदी गा'धीजी की नीिU, शा'िU संधि ,शरणागU ित्सलUा की rािना, शाUपूर्ण संधि िाUाम आिद को आिrD'िजU करक` अपन` राज्यादशम और काDादशम की 3ािपना की 5` ,जो "स्रसरी सम सब क5 ि5U 5ोह " की िि को सािमक बनाUा 5`।ग्™जी की अिधका'श कृ िUयो' में राष्ट्र प्रेम और बिलदानी rािना प्राणो'त्सगम का प्रUीक 5`। साक` U,काबा और कबमला,ग्रुक् ल, िस5राज, न5ष , raRU raRUी आिद में य5 rािना स'िदनशीलUा क` चमोत्कषम पर 5`। " म'री rूिम Uो 5` पूर्ण rूिम ि5 raRUी/ सौ नक्त लोक करें आक` आप आरUी।"13 'raRU raRUी' में ग्™जी प्Vषािम Lिकममिनष्ठा पर जोर द`U` 5ैं
,क्यो'िक स'सार r की िh बाधाL' िनर'UR प्रयास करन` िाल` Dि को करी िनराश न5ी 5ोन` द`Uी। हसीिलL ग्™ जी क5U` 5ैं , "ब`ठ` 5L Dिम क्ये आग` बढ़ो ऊच` चढो'/5` राग्य की क्या rािना, अब पाठ पौVष का पढ़ो।"14 अUः 5म क5 सकU` 5ैं
िक ग्™जी की काD रचनाL' काD स'िदना और मािनीय मूल्यो' की स्जनात्मकUा क` उस मंच पर स्शोिrU 5ैं, ज5ाँ स किि का काDादशम Lिराज्यादशम िनर'UR प्रिUिब'िबU 5ो र5ा 5` और स्रसररUा की rा'िU लोककल्याण कर र5ा 5`।

संदर्भ

1 साक` U, स™म सगम,प् 212

2 द्वापर, प् 103

3 साक` U, निम सगम, प् 324

4 ि5ी, अष्टम सगम, प् 275

5 ि5ी,निम सगम, प् 268

6 ि5ी, चU्िम सगम, प् 112

7 ग्रुक् ल, प् 43

8 साक` U, स™म सगम,212

9 िश्व िदना, प् 50

10 जयraRU, प् 295

11 साक` U,अष्टम सगम, प् 259

12 िक स'5ार,प् 22

13 न5ष,प् 27

14 raRU raRUी, प् 162